MAHESH TUTORIALS I.C.S.E.

ICSE X **Marks :** 80

SUBJECT : **HINDI**

Exam No. : MT/ICSE/PRELIM-I-SET A-001 **Time :** 3 hrs.

Model Answer Paper

(खण्ड'क')

A.1

1) भारत में त्योहारों का जाल-सा बिछा हुआ है । इन त्योहारों का संबंध विभिन्न धर्मों, संप्रदायों, रीति-रिवाज़ों, सामाजिक परंपराओं, किंवदंतियों तथा मान्यताओं से होता है ।

यदि समय-समय आने वाले ये त्योहार न हों, तो हमारा जीवन सूना-सूना तथा शुष्क प्रतीत होगा । ये त्योहार हमारे जीवन में प्रसन्नता तथा उत्साह का संचार करते हैं, परंतु आजकल त्योहारों के प्रति आस्था का अभाव देखा जा सकता है । वर्तमान भाग-दौड़ के जीवन तथा पश्चिमी संस्कृति के प्रभाव से लोग इन्हें परंपरागत ढंग से मनाने में उत्साह का प्रदर्शन नहीं करते । वे केवल औपचारिकताएँ निभाने में ही अपने कर्तव्य की इति-श्री मान लेते हैं । उदाहरण के लिए होली पर अपने कर्तव्य की इति-श्री मान लेते हैं । उदाहरण के लिए होली पर परस्पर गले मिलना, पुरानी शत्रुता को विस्मृत कर देना जैसी बातों का अभाव हो गया है । दीपावली का पर्व एक दूसरे के घर उपहारों के आदान-प्रदान तक सिमट कर रहा गया है तथा केवल पटाखों के शोर में लुप्त होता दिखाई दे रहा है इसी प्रकार रक्षा बंधन के त्योहार पर भाई अपनी बहनों को कुछ धनराशि देकर ही संतुष्टि का अनुभव कर लेते हैं । अन्य त्योहारों पर पहले जैसा उत्साह दिखाई नहीं पड़ता । कुछ लोग तो इन त्योहारों के प्रति इतने उदासीन हो जाते हैं कि इन्हें पारंपारिक ढंग से मनाने को ढोंग या दिखावा की संज्ञा दे देते हैं ।

सभी त्योहार अपना-अपना महत्त्व रखते हैं तथा जीवन के सूनेपन को दूर कर हमें नैतिक मूल्यों से जोड़े रखते हैं । ये सभी त्योहार हमें अपनी सांस्कृतिक परंपराओं, रीति-रिवाज़ों, मान्यताओं, जीवन-दर्शन तथा भारतीय संस्कृति के उच्चादर्शों से जोड़े रखते हैं । त्योहार चाहे किसी भी धर्म से जुड़े हों वे हमारे जीवन को उल्लास, उमंग,स्फूर्ति, नव-चेतना, सद्‌भाव, स्नेह, मैत्री तथा सांप्रदायिक सद्‌भाव से भर देते हैं । त्योहारों को मनाने का कारण चाहे कुछ भी हो, उनसे कोई-न-कोई प्रेरणा अवश्य प्राप्त होती है । ये देश की एकता और अखंडता को मज़बूत करते हैं । ये त्योहार हमें धर्म, न्याय तथा सच्चाई के मार्ग पर ले जाते हैं । यही नहीं स्थिति तो यह है कि इन त्योहारों पर धार्मिक सद्‌भाव के दर्शन भी होते हैं । दीपावली पर आतिशबाज़ी बनाने वाले कारीगर मुसलमान होते हैं, इसी तरह गणेश चतुर्थी, दुर्गा पूजा पर मूर्तियाँ बनाने वाले लोग भी अन्य धर्मों से जुड़े होते हैं । ईद पर हिंदू तथा सिक्ख भाई भी मुसलमानों को ईद की बधाई देते देखे जा सकते हैं । होली के अवसर पर इस प्रकार का भेदभाव प्राय: मिट जाता है कि जिस पर रंग डाला जा रहा है, वह किस धर्म को मानता है । क्रिसमस पर सभी धर्मों के लोग खुशियाँ मनाते हैं । इस प्रकार ये सभी त्योहार सांप्रदायिक सद्‌भाव को पुष्ट करते हैं । इस प्रकार ये सभी त्योहार सांप्रदायिक सद्‌भाव को पुष्ट करते हैं । राष्ट्रीय त्योहार हममें देशभक्ति, त्याग और बलिदान की भावना भरते हैं ।

हमारा कर्तव्य है कि हम त्योहारों को सच्ची आस्था, श्रद्‌धा एवं विश्वास से मनाएँ तथा उनसे मिलने वाले संदेशों को अपने जीवन में उतारें । **[15]**

2) फ़ैशन का व्यावहारिक अर्थ है - नित नए परिधानों से स्वयं को सुसज्जित करना तथा अपने आपको आकर्षक दिखाने की प्रवृत्ति । व्यक्ति स्वयं को अत्यंत आकर्षक एवं प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत करना चाहता है, इसीलिए वह अत्याधुनिक वेशभूषा, केशसज्जा आदि का सहारा लेता है । स्त्रियों की आभूषणप्रियता तथा बनाव-शृंगार की प्रवृत्ति भी उनकी फ़ैशनपरस्ती की परिचायक है ।

वैसे तो प्रत्येक युग में फ़ैशन का बोलबाला रहा है । भारत की प्राचीन चित्रकला एवं मूर्तिकला को देखकर तत्कालीन फ़ैशन की झलक मिल जाती है पर आजकल पाश्चात्य सभ्यता के बढ़ते प्रचार के कारण फ़ैशन का स्वरूप ही बदल गया है । अधिकांश युवक-युवतियाँ ही नहीं, बड़ी आयु के स्त्री-पुरुष भी फ़ैशन की चकाचौंध से भ्रमित होकर उसके प्रवाह में बह जाते हैं । फ़ैशन को बढ़ाने में चलचित्र का भी बड़ा योगदान है । जब फ़िल्मों में नायक-नायिकाएँ विभिन्न प्रकार के फ़ैशन करते नज़र आते हैं, तो चारों ओर उसका अनुसरण होने लगता है तथा फ़िल्मी वेशभूषा के अनुसार ही वस्त्रों आदि की भरमार हो जाती है ।

फ़ैशन का भूत विद्यार्थियों पर सबसे अधिक हावी रहता है । उनके वस्त्रों के डिज़ाइन, केश-सज्जा, जूते-चप्पल तथा आभूषण आदि को देखकर उनकी फैशनप्रियता का सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है । आज तो लड़के भी कान छिदवाने लगे हैं । लड़कियाँ सलवार, कुर्ता और साड़ी की जगह पैंट, जींस शॉर्ट्स एवं कमीजें पहनने लगी हैं । दुपट्टा ओढ़ना तो लुप्तप्राय हो गया है । युवक-युवतियों के जूते, सैंडल एवं चप्पलों को देखकर हँसी आती है । विद्यार्थी अपनी संस्कृति एवं परिवेश को पूर्णतया विस्मृत कर चुके हैं तथा अंग प्रदर्शन करने में ज़रा भी नहीं हिचकिचाते । शलीनता एवं सादगी से उन्हें परहेज़ है ।

फैशन की बढ़ती दुष्प्रवृत्ति के कारण अनेक प्रकार के अपराध होते हैं तथा नैतिक पतन भी होता है । अनेक प्रकार की सामाजिक बुराइयों, चरित्रहीनता तथा अनैतिक अपराधों के लिए बढ़ता फैशन ही जिम्मेदार है । बढ़ती हुई फैशन पत्रिकाएँ तथा टी.वी पर दिखाए जानेवाले फैशन शो भी आग में घी का काम कर रहे हैं । टी.वी. पर प्रसारित किए जानेवाले फैशन चैनल पर तो हर समय विश्व के अनेक मॉडल आपत्तिजनक ढंग से रैंप पर जिस प्रकार कैटवॉक करते हैं, वह समाज के पतन के लिए उत्तरदायी है एवं अत्यंत घातक है ।

बढ़ते हुए फैशन से छुटकारा पाना आसान नहीं है , फिर भी एक मर्यादा तक फैशन को अपनाने में कोई हर्ज नहीं है, क्योंकि फैशन एक ऐसी प्रवृत्ति है जिससे बचा नहीं जा सकता । इस दिशा में सभी और से गंभीर प्रयास किए जाने चाहिए ताकि फैशन के द्वारा समाज की मर्यादा भंग न हो तथा फैशन भारतीय संस्कृति के उच्चदर्शों पर कुठराघात न कर सके । **[15]**

3) **गुरु संस्कृति के पोषक हैं, वे ही ज्ञान प्रदान हैं,**
साक्षरता के अग्रदूत, वे ही राष्ट्र-निर्माता हैं ।

अध्यापक वर्तमान शिक्षा-प्रणाली कर आधार-स्तंभ माने जाते हैं । अध्यापक ही एक अबोध तथा बाल-सुलभ मन-मस्तिष्क को उच्च शिक्षा व आचरण द्वारा श्रेष्ठ, प्रबुद्ध व आदर्श व्यक्तित्व प्रदान करते हैं । प्राचीन काल में शिक्षा के माध्यम आश्रम व गुरुकुल हुआ करते थे । वहाँ गुरुजन शिक्षा तथा आचार-विचार के द्वारा विद्यार्थियों को आदर्श चरित्र के निर्माण में सहायता किया करते थे । आज शिक्षा का व्यवसायीकरण हो चुका है । विद्यालयों में अध्यापक नियुक्त होते हैं, जिनमें से अधिकांश का लक्ष्य आजीविका कमाना होता है ।

मेरे विचार में अध्यापक का किसी भी व्यक्ति के जीवन में अपार महत्त्व होता है । आज के युग में लड़का हो या लड़की, दोनों को उचित शिक्षा देना अनिवार्य हो चुका है । अध्यापक वही महत्त्वपूर्ण समझा जाता है, जो अपने गरिमापूर्ण चरित्र द्वारा अपने विद्यार्थी-वर्ग को अनुकूल तथा सकारात्मक दिशा में प्रभावित करने में सफल हो सके । महान संत कबीरदास ने तो गुरु का महत्तव ईश्वर से भी बढ़कर बताया है -

गुरु गोबिंद दोऊ खड़े, काके लागूँ पाय ।
बलिहारि गुरु आपने, गोबिंद दियो बताए ।।

अध्यापक बनना सरल है, परंतु आदर्श अध्यापक बनना अत्यंत कठिन है । आदर्श अध्यापक वही हो सकता है, जो सबसे पहले अपना आचरण शुद्ध करे । उसे सदाचारी होना चाहिए । उसके लिए समय का महत्त्व सर्वोपरि हो ताकि वह अनुशासित हो सके और विद्यार्थी उसका अनुकरण कर सकें । वह विनम्र स्वभाव का हो ।उसमें सहनशीलता व सहयोग-भावना होनी चाहिए । ताकि विद्यार्थियों को परस्पर व्यवहार में सहनशीलता व सहायता का गुण सिखाया जा सके । एक आदर्श अध्यापक वही है, जो विद्यार्थियों की आयु तथा उसके अनुसार उनके मनोविज्ञान को समझ सके ।

मेरे विचार में अध्यापक का समदर्शी होना एक अनिवार्य गुण है । भारत में तो इस गुण की अतीव आवश्यकता है क्योंकि यह विभिन्नताओं का देश है । यहाँ अनेक धर्मों, जातियों, वर्गों, प्रांतों व भाषाओं से जुड़े विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने के लिए आते हैं । अध्यापक ऐसा होना चाहिए, जो विद्यार्थियों को समान व्यवहार की शिक्षा अपने आचरण द्वारा दे सके । हमारे समाज में लड़के और लड़की में पर्याप्त भेद किया जाता रहा है, जो एक निदंनीय धारणा है । अध्यापक को यह भेद जड़ से समाप्त करना है, ताकि लड़की में किसी प्रकार की हीन-भावना न पनप सके ।

यदि मैं अध्यापक बनूँगा, तो उन सभी दुर्गुणों या कुवृत्तियों को स्वयं से दूर रखूँगा, जिन्हें मैं अनेक वर्तमान अध्यापकों में देख रहा हूँ । सबसे पहली और महत्त्वपूर्ण सच्चाई यह है कि विद्यार्थी सदैव अपने अध्यापकों का अनुकरण करते हैं, विशेषण उनके पहनावे व चाल-ढाल का ।

मैं प्रयास करूँगा कि मैं एक आदर्श अध्यापक बनूँ और स्वयं को लालच, पछपात, असहयोग, दिखावा आदि अवगुणों से दूर रखकर देश के भावी निर्माण में सहयोग दे सकूँ । साथ ही मेरा प्रयास होगा कि विद्यार्थियों को प्रबुद्ध नागरिक बनाने के लिए नैतिक मूल्यों के प्रति निष्ठा जाग्रत करूँ तथा उनमें मानवीय मूल्यों को स्थापित कर सकूँ । **[15]**

4) **''वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ।''**

उक्ति का अर्थ है दूसरों का हित करना अर्थात् परोपकार करना । भारत एक महान् देश है । यहाँ की संस्कृति श्रेष्ठ मूल्यों को महत्त्व देती है । यहाँ के लोगों ने आदिकाल से यह सभ्यता विकसित की है कि अपने लिए जीना कोई नहीं होता । मनुष्य और पशु में यही अंतर है कि मनुष्य दूसरे के साथ प्रेम, सद्भाव, मैत्री, सहयोग व परोपकार की भावना के साथ निवास करता है । वृक्ष, नदियाँ, धरती सभी हम पर उपकार करते हैं ।

हमने महान् ऋषि दधीचि, शिवि, राजा हरीशचंद्र जैसे अनेक दिव्य व्यक्तियों के परोपकार की कथाएँ सुन रही हैं । इतिहास में भी ऐसे हज़ारों उदाहरण पाए जाते हैं । इसी संबंध में एक कहानी इस प्रकार है -

हमारे गाँव की पड़ोसी रिसायत में एक विधवा रानी रहा करती थी । उसके पास धन - संपत्ति की कोई कमी न थी । अंग्रेजी सरकार का साथ न देने के कारण उसके पति को राज्य से वंचित कर दिया गया था । उसकी सारी संपत्ति छिन गई । केवल दो लाख वार्षिक भत्ता लगा दिया गया । राजा के एक गुप्त खज़ाना था जिसका पता केवल राजा को था ।

मरते समय राजा ने अपने उसे गुप्त खज़ाने का मार्ग अपनी पत्नी को बता दिया । अब विधवा रानी का जीवन परोपकार तक सीमित हो गया ।

हमारे गाँव में एक अध्यापक रामस्वरूप रहते थे । वे गरीब थे, परंतु बड़े संतोषी व स्वाभिमानी पुरुष थे । जीवन में किसी के आगे हाथ न फैलाया । उनके परिवार में उनकी पत्नी व दो बेटियाँ थीं । वेतन के रूप में केवल साठ रुपये मिलते थे जिनसे उनकी रोटी तथा कपड़े ही मुश्किल से बन पाते थे ।

बेटियों के बड़ा होने पर उनके विवाह की चिंता सताने लगी, लेकिन निर्धन होने के कारण कोई व्यक्ति उनसे रिश्ता जोड़ने को तैयार न होता था ।

एक दिन रामस्वरूप की पत्नी ने उनसे कहा - ''सुना है सिरमौर की विधवा रानी लोगों को बहुत दान देती हैं । क्यों न हम अपनी बेटियों की समस्या लेकर उनके पास जाएँ । वे हमारी अवश्य आर्थिक सहायता करेंगी ।''

लेकिन अध्यापक आत्माभिमानी थे, नहीं माने ।

कुछ दिन पाकर सिरमौर की रानी के गुप्तचर ने रामस्वरूप की बेटियों की समस्या उन्हें बता दी । सुनकर रानी ने कहा - तो जाओ धन ले जाकर उनकी मदद करो ।

गुप्तचर बोला - ''रामस्वरूप जीते - जी दान न लेगा । वह बड़ा ही आत्माभिमानी मास्टर है ।'' यह सुनकर रानी मौन रह गईं ।

वे चिंतित रहने लगीं । अंततः रानी को एक उपाय सूझा । उन्होंने एक छोटे से संदूक में कुछ आभूषण व सोने के सिक्के रखे और एक विश्वासपात्र सैनिक को आदेश दिया कि वह उस संदूक को रामस्वरूप की बंजर भूमि में गाड़ दे ।

सैनिक ने रात के अँधेरे में दुनिया से बच बचाकर आदेश का पालन करते हुए संदूक गाड़ दिया तथा भारी पत्थरों से ढक दिया ।

कुछ दिन बाद रानी रामस्वरूप के घर पर एक साध्वी भिक्षा के लिए गई । भिक्षा माँगने पर अंदर से आवाज़ आयी - ''ठहरो, लाते हैं कुछ ।'' रामस्वरूप एक पत्ते पर दो सूखी रोटियाँ लेकर आया तो साध्वी ने कहा- ''बच्चा, तुम्हें संभवत: ज्ञान नहीं है कि तुम्हारी बंजर भूमि पर कभी तुम्हारे पुरखे रहते थे । वहाँ धन दबा पड़ा है तुम उसे क्यों नहीं निकालते ?'' साध्वी चली गई । रामस्वरूप को संदूक मिल गया परंतु यह साध्वी अर्थात् रानी का परोपकार था । **[15]**

5) ऊपर दिए गए चित्र में किसी महानगर की सड़क पर वाहनों की भीड़ का दृश्य उभर रहा है । वाहनों से निकलता धुआँ वायु प्रदूषण फैला रहा है । इन वाहनों की ध्वनि से ध्वनि प्रदूषण फैल रहा है । वाहनों की इस अंधाधुंध वृद्धि ने मनुष्य के जीवन व स्वास्थ पर बुरा प्रभाव डाला हैं ।

आज का जीवन भाग दौड़ का जीवन है । मनुष्य को तेजी से होने वाले विकास ने इतना लुभाया है कि वह अपने स्वास्थ की भी चिंता नहीं कर रहा सड़क पर बढ़ते वाहन मानव के स्वास्थ के लिए खतरे की घंटी बजा रहे हैं । परंतु वह सचेत नहीं हो रहा । नगरों में बढ़ते औद्योगिक स्थलों ने गाँव में रहने वाले लोगों को नगर की ओर आकर्षित करना प्रारंभ कर दिया है क्योंकि वहाँ पर गाँव की तुलना में रोजगार के अधिक अवसर हैं । इस अंधी दौड़ ने नगरों में प्रवास की दर बढ़ा दी है । परिणामस्वरूप नगरों में भीड़ बढ़ती जा रही हैं ।

आज प्रत्येक मनुष्य को अपने गंतव्य पर पहुँचने की जल्दी होती है । इसके लिए वह स्कूटर, मोटरसाईकल, ऑटोरिक्शा, कार, टैक्सी, बस आदि निजी तथा सार्वजनिक वाहनों का प्रयोग करता है । व्यापार के लिए ट्रकों व ट्रैक्टर ट्रालियाँ प्रयुक्त हो रही हैं । इन वाहनों में अश्मीभूत ईंधन का प्रयोग होता है जैसे पेट्रोल व डीजल । इनसे निकलने वाला धुआँ पर्यावरण को प्रदूषित करता है । वाहनों द्वारा निष्कासित धुएँ में अनेक खतरनाक प्रदूषक तत्त्व मिश्रित होते हैं जो मानव स्वास्थ के लिए अति हानिकारक होते हैं । ये प्रदूषक मुख्यत: कार्बन डायऑक्साइड, सीसा तथा अन्य सूक्ष्म कणों के रूप में होते हैं । ये मनुष्य की साँस द्वारा शरीर के भीतर जाकर घातक रोगों का कारण बनते हैं । **[15]**

A.2

1) मुख्य निर्वाचन आयुक्त,
निर्वायन आयोग,
नई दिल्ली ।
दिनांक : 16.11.20.....

विषय : राजनीति में बढ़ते भ्रष्टाचार के संबंध में ।

मान्यवर,

इस पत्र के माध्यम से मैं आपका ध्यान राजनीति में बढ़ते भ्रष्टाचार की ओर इंगित करना चाहता हूँ । आज राजनीति में भ्रष्टाचार ही देश व समाज की दुर्दशा का मूल है और इसका प्रमुख कारण है, अयोग्य एवं अपराधी प्रवृत्ति वाले राजनीतिज्ञों को चुनाव लड़ने का अवसर देना ।

आज ऐसे कितने ही राजनीतिज्ञ हैं, जिन पर अपराधों, घोटालों एवं भ्रष्टाचार के आरोप सिद्ध हो चुके हैं; परंतु आश्चर्य है कि उनमें से किसी को भी आज तक सज़ा नहीं हुई ऐसे लोग न केवल खुले घूम रहे हैं, बल्कि चुनावों में टिकट प्राप्त कर जीत भी जाते हैं । चारा घोटाला इसका ज्वलंत उदाहरण है और हाल में सामने आए राष्ट्रमंडल खेलों के घाटाले तथा स्पैक्ट्रम घोटाले में अनेक राजनीतिज्ञों का नाम आया है ।

मेरा आपसे अनुरोध है कि यदि निर्वाचन ऐसे भ्रष्टाचारी लोगों को चुनाव लड़ने के अयोग्य घोषित कर दे और उन पर जल रहे मुकदमों के फ़ैसले आने तक उनके चुनाव लड़ने पर रोक लगा दे, तो निश्चय ही राजनीति में

पनप रहे भ्रष्टाचार पर अंकुश लगेगा । मान्यवर, यह अधिकार केवल निर्वाचन आयोग को ही है कि वह सही प्रत्याशी को ही चुनाव लड़ने का अधिकार दे । ये विचार मेरे अकेले के नहीं, अपितु हर उस नागरिक के हैं, जो आज भ्रष्टाचार के कारण पिस रहा है ।

आशा है आप मेरे विचारों को गंभीरतापूर्वक लेंगे और उचित कदम उठाएँगे ।

सधन्यवाद ।

भवदीय,

क.ख.ग. **[7]**

2) दीपक ग्रोवर
4/26 मालवीय नगर
दिल्ली ।
दिनांक : 07.08.20.....
प्रिय अनुज प्रत्यूष,
शुभाशीष !

आशा है तुम्हारी पढ़ाई ठीक प्रकार से चल रही होगी तथा तुम्हारे स्वास्थ्य में भी सुधार हो रहा होगा ।

पिछले दिनों मुझे तुम्हारी कक्षा का मनीष अग्रवाल मिला था जिससे पता चला कि आजकल तुम अपना अधिकांश समय मोबाइल का प्रयोग करके बिताते हो तथा मोबाइल के कारण तुम्हारे कुछ मित्रों ने तुम्हारा नाम रख दिया है - 'मोबाइल चिपकू ।'

प्रिया अनुज, इसमें कोई संदेह नहीं है कि आज के युग में मोबाइल एक अनिवार्यता बन गया है जिसके बिना गुज़ारा चलना मुश्किल है, पर इसका जरूरत से ज्यादा प्रयोग अनेक कारणें से हानिकारक भी है । भी है ।

वैज्ञानिकों का मानना है कि आवश्यकता से अधिक मोबाइल का प्रयोग स्वास्थ्य को भी प्रभावित करता है। इससे हमारी श्रवणेंद्रियों पर भी दुष्प्रभाव पड़ता है । साथ ही विद्यार्थी के लिए तो यह उसकी एकाग्रता में बाधक बन जाता है । दूसरे मोबाइलों पर आजकल तरह - तरह के एस.एम.एस. आते हैं, जिनमें कई न केवल अनावश्यक होते हैं वरन अच्छी भावनाओं वाले नहीं होते । मोबाइल पर कुछ अश्लील चित्र आदि भी देखे जाते हैं जिनसे हमारा चारित्रिक पतन होता है । पढ़ाई - लिखाई के गंभीर क्षणों में अचानक मोबाइल का बज उठना ध्यान विचलित करने वाला होता है । मेरी इन बातों का यह अर्थ कदापि नहीं है कि तुम मोबाइल का प्रयोग बंद कर दो । जहाँ आवश्यक लत मत पालो ।

मुझे विश्वास है कि तुम मेरी सलाह मानकर उचित निर्णय लोगे ।

तुम्हारा अग्रज
दीपक ग्रोवर **[7]**

A.3

i) आचार्य को ऐसे सहायकों की आवश्यकता थी जो उस व्यवसाय को धनोपार्जन या उज्ज्वल भविष्य के लिए नहीं अपितु एक पवित्र ध्येय के रूप में अपनाए । **[2]**

ii) आचार्य की निराशा का कारण था कि युवकों में अधिकांश रसायनशास्त्र के ज्ञाता तो थे, विषय से भी परिचित थे लेकिन एक रसायनशास्त्री के लिए जो पवित्र ध्येय होता है उसका सभी में अभाव था ।निराश होकर उन्होंने स्वयं ही सारा कार्य करने का निश्चय कर लिया । **[2]**

iii) आचार्य ने दोनों युवकों की परीक्षा लेने के लिए उन्हें एक पदार्थ देकर दो दिन के भीतर उसका रसायन तैयार कर लाने को कहा । उन्होंने ऐसा इसलिए किया क्योंकि इस बहाने से वह इस कार्य में आने वली बाधाओं के प्रति युवकों के व्यवहार एवं मानसिकता की परख करना चाहते थे । **[2]**

iv) दूसरा युवक इसलिए रसायन तैयार नहीं कर सका था क्योंकि जाते समय उसे मार्ग में सड़क दुर्घटना में घायल एक वृद्ध व्यक्ति मिल गया था जिसकी सेवा में उसका सारा समय व्यतीत हो गया था । इस घटना से इस युवक की संवेदनशीलता एवं उदारता का गुण स्पष्ट होता है । **[2]**

v) आचार्य ने अपना सहायता दूसरे युवक को चुना क्योंकि उसमें परोपकार की भावना थी । आचार्य के अनुसार पीड़ा से कराहते किसी व्यक्ति की उपेक्षा करने वाला रसायनशास्त्री नहीं हो सकता । **[2]**

A.4

1) क) व्यवहार - व्यवहारिक **[½]**
ख) दर्शन - दर्शनीय **[½]**

2) क) रात - रात्रि, निशा **[1]**
ख) इच्छा - अभिलाषा, आकांक्षा **[1]**

3) क) निंदा × प्रशंसा **[½]**
ख) स्थूल × सूक्ष्म **[½]**
ग) दुर्लभ × सुलभ **[½]**
घ) निरर्थक × सार्थक **[½]**

4) क) कड़वा - कड़वाहट **[½]**
ख) घबराना - घबराहट **[½]**

5) क) **मुट्ठी गर्म करना** - रिश्वत देना
वाक्य - आजकल सरकारी अफसरों की मुटठी गर्म करने पर ही काम हो रहा है। **[1]**
ख) **कलई खुलना** - भेद खुलना, सच का पता चल जाना
वाक्य - आजकल भ्रष्ट राजनेताओ की कलई खोलने में सभी डर जाते हैं। **[1]**

6) क) आध्यापक बच्चों के कार्य की प्रशंसा करता है। **[1]**
ख) विद्यार्थियों की उद्दंडता पर प्रधानाचार्य गुस्सा हो गए। **[1]**
ग) अभियुक्त को रिहा कर दिया गया। **[1]**

Section 'B' (40 marks)
साहित्य सागर गद्य

A.5

क) सेठ कुंदनपुर धन्ना सेठ के घर अपना एक यज्ञ बेचने के लिए गए थे । उन्होंने धन्ना सेठ को बताया कि मैं बहुत परेशानी में हूँ और आपके हाथ एक यज्ञ बेचना चाहता हूँ । सेठ और धन्ना सेठ दोनों बात कर रहे थे कि धन्ना सेठ की पत्नी भी वहाँ आ गई । उन्होंने सेठजी से कहा कि हम आपका यज्ञ खरीदने के लिए तैयार हैं लेकिन जब आप अपना महायज्ञ बेचेंगे तब, हम आपका यज्ञ खरीदेंगे । सेठ ने जब धन्ना सेठ के पत्नी की बात सुनी तो आश्चर्य चकित हो गए । उन्होंने कहा कि मैंने तो बरसों से कोई यज्ञ नहीं किया है । धन्ना सेठ की पत्नी ने उनको समझाया कि आज आपने जो बिना स्वार्थ के भुखे कुत्ते को रोटियाँ खिलाई, वही महायज्ञ है । सेठ ने कोई जवाब नहीं दिया चुपचाप अपनी पोटली उठाई, निराश होकर खाली हाथ लौट आए । चबूतरे पर रात भर सोए रहे, फिर सुबह होते घर के लिए चल पड़े । घर पर सेठानी बड़ी - बड़ी आशाएँ लगाकर बैठी थी । वह सेठ का इतंजार कर रही थी । **[2]**

ख) किसी नगर में एक सेठ रहते थे, वे बहुत अमीर थे । समय बदला सेठ गरीब हो गए । गरीबी के कारण वे अपना यज्ञ बेचने के लिए कुंदनपुर नामक नगर में गए थे । सेठानी बैठकर उनका इंतजार कर रही थी । सेठ को खाली हाथ आता देखकर सेठानी काँप गई । उनको लगा कि सेठ का यज्ञ नहीं बिका । उन्होंने सोचा कि यज्ञ बेचने से उनकी गरीबी दूर हो जाएगी इसीलिए जब उन्होंने सेठ को खाली हाथ देखा तो काँप उठी । **[2]**

ग) सेठ जी की स्थिति बहुत खराब थी, वे अपना यज्ञ बेचना चाहते थे इसलिए वे कुंदनपुर गए थे । कुंदनपुर के धन्ना सेठ को जब उन्होंने बताया कि वे एक यज्ञ बेचना चाहते हैं । सेठ की बात सुनकर धन्ना सेठ की पत्नी ने कहा कि यदि आप अपना महायज्ञ बेचेंगे, तभी हम खरीदेंगे । पहले तो सेठ को सेठानी की बात समझ में नहीं आई । धन्ना सेठ की पत्नी ने फिर उनको समझाया कि आज आपने कुत्ते को अपना भोजन नि :स्वार्थ भाव से खिलाया, वही महायज्ञ है । सेठ ने सोचा कि किसी को भोजन देना, या उसकी भूख मिटाना तो मनुष्य का परम कर्तव्य है । यह तो प्रत्येक मानव का धर्म है । इसे कोई कैसे बेच सकता है ? मनुष्य को अपना कर्तव्य नहीं बेचना चाहिए । सेठ, कुंदनपुर से घर वापस आए और उन्होंने अपनी पत्नी को पूरी बात बताई । सेठ की पत्नी ने सेठ की पैरों के नीचे की धूल उठाकर माथे पर लगा लिया । उनका मन प्रसन्न हो गया कि उनके पति ने गरीबी में भी धर्म और मानवता का रास्ता नहीं छोड़ा । **[3]**

घ) सेठ जी कुंदनपुर से वापस आए । सेठ जी ने सेठानी को पूरी घटना बताई । उन्होंने सेठानी को बताया कि एक कुत्ता मिला, जो बहुत कमजोर था । मैंने उसको सारी रोटियाँ खिला दी । शाम को जब मैं धन्ना सेठ के घर पहुँचा, तो धन्ना सेठ की पत्नी ने कहा कि अपना महायज्ञ बेचोगे, तभी हम खरीदेंगे, नहीं तो हम यज्ञ नहीं खरीदेंगे । मैंने बताया कि सालों से मैंने कोई यज्ञ नहीं किया । धन्ना सेठ की पत्नी ने बताया कि आपने कुंज में कुत्ते को खाना खिलाया, वही महायज्ञ है । मैंने अपने कर्तव्य को बेचना उचित नहीं समझा और वापस लौट आया । सेठ की बात समाप्त होने के बाद सेठानी घर में दिया जलाने गई तो चौखट के पास उसका पैर पत्थर से टकराया । सेठानी ने सेठ को बुलाकर वह पत्थर दिखाया । सेठ ने आकर पत्थर उठाया, तो वहाँ से नीचे जाने के लिए सीढ़ियाँ दिखाई देने लगी । दोनों सीढियाँ से तहखाने में पहुँचे, तो देखा कि तहखाना हीरे-जवाहरातों से भरा हुआ था । यही आश्चर्य जनक घटना उस दिन सेठ के घर में घटी । **[3]**

A.6

क) उपर्युक्त कथन तब कहा गया, जब लेखक और उनके मित्र उस पहाड़ी बालक को नौकरी दिलाने की आशा से अपने वकील मित्र के पास ले गए थे । वकील ने उस बालक को नौकरी पर रखने के लिए इन्कार कर दिया । बालक निराश होकर वहाँ से चला गया । किसी ने उसकी कोई मदद नहीं की । दूसरे दिन वह होटल 'डी पव' नहीं आया क्योंकि नैनिताल की अत्यधिक ठंड ने उसके प्राण ले लिए । **[2]**

ख) लेखक का मित्र बहुत भावुक प्रवृति का था । वह लड़के की सहायता करना चाहता था । वकील साहब ने उसकी किसी प्रकार की मदद नहीं की इसलिए लड़के को लेकर वकील साहब के पास आया । बालक ने देखा कि बात नहीं बन रही, तो वह वहाँ से बहुत तेजी से निकल गया । ठंड बहुत अधिक थी, गर्म कपड़ों को चीरती हुई हवा सीधे बदन पर तीर के जैसी चुभ रही थी । लेखक और उनके मित्र भी अपने होटल 'डि पव' चले गए । लेखक ने स्वार्थ के उपदेश सुनाते हुए कहा कि पहले अपने बारे में सोचो, तब दूसरों के बारे में सोचना । यह सुनकर लेखक के मित्र उदास हो गए और बोले इसे हमारा स्वार्थ कह सकते हो, हमारी मजबूरी भी कह सकते हो, यही हमारी बेहयाई भी है । **[2]**

ग) लेखक और उनके मित्र अपनी नैनीताल की सुखद यात्रा समाप्त कर अपने गंतव्य स्थान तक जाने के लिए तैयार हो गए थे । उन्होंने लड़के की प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं समझी । जैसे ही वे जाने के लिए तैयार हुए, तो उन्हें यह समाचार मिला कि पिछली रात एक पहाड़ी बालक, सड़क के किनारे एक पेड़ के नीचे ठंड से ठिठुरकर मर गया । वे समाचार सुनते ही समझ गए कि यह बालक वही होगा जो उन्हें मिला था, इन लोगों ने उसकी सहायता नहीं की । **[3]**

घ) बालक रातभर शीत से ठिठुरकरता रहा । उसके पास न ढंग का कपड़ा था और नहीं बिस्तर था । अंतत: उसकी मौत हो गई । उस गरीब बालक के मुँह, छाती, मुट्ठियों और पैरों पर बर्फ चिपकी हुई थी, मानो इस समाज की बेशर्मी ढँकने के लिए प्रकृति ने उस बालक के लिए सफेद, ठंडे कफन का प्रबंध किया हो । आदमी, समाज निष्ठुर हो सकता है लेकिन प्रकृति नहीं । कहानी के माध्यम से लेखक संदेश देना चाहते हैं कि जब प्रकृति अपनी भूमिका, अपना कर्तव्य निभा सकती है, तो मनुष्य क्यों नहीं निभाता । प्रत्येक मनुष्य के मन में करुणा और सहानुभूति के भाव अवश्य होने चाहिए । सभी को निश्वार्थ भाव से असहाय व गरीबों की मदद करनी चाहिए । झूठी दया भावना नहीं दिखानी चाहिए । **[3]**

A.7

क) श्रीकंठ सिंह ने बहुत परिश्रम करके बी.ए. की डिग्री प्राप्त की । अंग्रेजी पढ़े-लिखे होने के बावजूद वे पाश्चात्य प्रथाओं के विशेष प्रेमी नहीं थे । वे अक्सर बड़े जोर-शोर से उसकी निंदा और तिरस्कार किया करते थे । **[2]**

ख) श्रीकंठ सिंह को भारतीय संस्कृति से विशेष लगाव था । वे दशहरे के अवसर पर बहुत जोश के साथ रामलीला में भाग लिया करते थे । वे स्वयं भी एक पात्र का अभिनय किया करते थे । हर समय प्राचीन सभ्यता का गुणगान किया करते थे । **[2]**

ग) श्रीकंठ सिंह संयुक्त कुटुंब के उपासक थे तथा स्त्रियों की कुटुंब में मिल - जुल कर रहने की जो अरुचि होती जा रही है, उसे वह हानिकारक समझते थे । गाँव की बहुएँ संयुक्त परिवार के पक्ष में नहीं थीं अर्थात वह संयुक्त परिवार में नहीं रहना चाहती थी । गाँव की कुछ स्त्रियाँ तो उन्हें अपना शत्रु समझने लगी थीं । स्वयं उनकी पत्नी भी इस विषय में उनका विरोध करती थी । **[3]**

घ) श्रीकंठ सिंह को अंग्रेजी भाषा में डिग्री प्राप्त करने के बाद भी विदेशी सामाजिक प्रथाओं से कोई लगाव नहीं था । अपनी प्राचीन सभ्यता की प्रशंसा करना ही उनका मुख्य गुण था । इसके अतिरिक्त दशहरे के दिनों में वे बड़े उत्साह से रामलीला में भाग लिया करते थे और किसी - न - किसी पात्र का अभिनय किया करते थे । वे शांत स्वभाव के बहुत समझदार व्यक्ति थे । उनके समझाने से कई परिवार अलगाव से बच गए थे । वे परिवार विरोधी बातें करने पर अक्सर अपने मित्रों को भी आड़े हाथों लेते थे । **[3]**

पद्य

A.8

क) कवि का कहना है कि समझदार लोगों को सही समय पर सही काम करना चाहिए । जैसे नौका में किसी छिद्र से पानी भर जाए, तो पानी को दोनों हाथों से बाहर निकालना चाहिए और नौका एवं स्वयं को डूबने से बचा लेना चाहिए । इसी प्रकार यदि घर में अधिक धन या पैसा हो, तो निर्धनों एवं गरीबों में बाँट देना चाहिए अर्थात दोनों हाथों से दान करना चाहिए । ऐसा करने से आपका मान और यश बना रहेगा । **[2]**

ख) उपर्युक्त पंक्ति का आशय है कि दीन - दुखियों की सहायता के लिए हमें सदा तैयार रहना चाहिए । भगवान का स्मरण करते हुए हमें दूसरों की भलाई के लिए अपना जीवन समर्पित कर देना चाहिए । यदि मनुष्य ऐसा कर्म करता है, तो समाज में उसका मान और यश सदैव बना रहता है । **[2]**

ग) उपर्युक्त कुंडली में कवि गिरिधर जीने कुछ लोक व्यवहार एवं नीतिगत बातों की प्रेरणा दी है । धनवान व्यक्ति को सदैव परोपकार करना चाहिए । कमजोर और असहाय लोगों की मदद करनी चाहिए । विद्वानों का ऐसा ही मानना है कि जब हम दूसरों की सहायता करते हैं, तो ईश्वर भी हमारी सहायता अवश्य करते हैं इसलिए हमें समाज में अच्छे और भलाई के काम करने चाहिए । हमें परोपकार में अपना जीवन लगा देना चाहिए । ऐसा करने से समाज में हमारा मान सम्मान बना रहता है । **[3]**

घ) उपर्युक्त कुंडली में गिरिधर ने स्पष्ट किया है कि मनुष्य के हृदय में परमार्थ या परोपकार की भावना होनी चाहिए । यदि किसी व्यक्ति के पास अधिक धन - दौलत आ जाए, तो उसे निर्धन या गरीब लोगों में बाँट देना चाहिए क्योंकि अधिक धन होने से घर में कई बुराइयाँ भी आ जाती हैं । हमें अपना जीवन रहते हुए समाज में अच्छे और परोपकार के काम करने चाहिए अर्थात दूसरों की भलाई के लिए अपना जीवन समर्पित कर देना चाहिए । हमें समाज में अच्छा काम करते हुए हमें अपना यश और सम्मान बनाए रखना चाहिए । **[3]**

A.9

क) इस संसार में चारों तरफ समस्या, परेशानी, दुख और पीड़ा फैली हुई है । एक भी मनुष्य सुखी दिखाई नहीं देता । कवि का मानना है कि ये समस्याएँ, परेशानियाँ मनुष्य के विकास के मार्ग में बाधक हैं, ये मनुष्य को आगे नहीं बढ़ने देती । मनुष्य जब परेशानियों से घिरा रहता है, तब वह अपने विकास के विषय में नहीं सोच पाता है । वह अपनी छोटी - मोटी परेशानियों से घबरा जाता है, जिससे उसका आत्मविश्वास कम हो जाता है । इस प्रकार आत्मविश्वास की कमी के कारण उसके जीवन की छोटी समस्याएँ भी बड़ी बन जाती हैं । **[2]**

ख) कविता का आशय यह है कि हमें प्रकृति द्वारा दी गई वस्तुओं का मिल बाँटकर उपभोग करना चाहिए । इस संसार में हमारे सामने अनेक प्रकार की मुश्किलें आती हैं; हमें उन मुश्किलों का मिलजुल कर सामना करना चाहिए । प्रत्येक मनुष्य का परम कर्तव्य है कि सबके दुख में दुखी और सबके सुख में सुखी हो । हमें एक - दूसरे की समस्या को समझना चाहिए और एक - दूसरे को उचित सम्मान देना चाहिए ।

इस प्रकार मनुष्य अपने जीवन की प्रत्येक समस्या का आसानी से समाधान कर सकता है और अपने जीवन को खुशहाल बना सकता है । **[2]**

ग) इस धरती पर शांति बनाए रखने के लिए मुनष्य में स्नेह, सहयोग और भाईचारे की भावना होनी चाहिए । जब मनुष्य को ईश्वर के द्वारा दिया गया सुख, आनंद और खुशी रूपी उपहार बराबर मात्रा में प्राप्त होगा और वे उसका उपभोग करेंगे, तब उनके मन को सुकून मिलेगा, तभी वे परेशानी में एक दूसरे की सहायता करेंगे और उनकी खुशियों में भागीदार होंगे । यदि प्रत्येक मनुष्य किसी के साथ अन्याय न करे, न्याय का साथ दे, तो इस धरती में चारों ओर सुख - ही - सुख होगा । मनुष्य दूसरों के दु:ख को अपना दुख समझकर उसकी सहायता करे और रास्ते के बाधाओं को दूर करता हुआ निरन्तर आगे बढ़ता रहे, तो ऐसी स्थिति में हम इस संसार में शांति बनाए रख सकते हैं । **[3]**

घ)

न्यायोचित	-	न्याय के अनुसार	विघ्न	-	बाधा, रुकावट
सुलभ	-	आसानी से प्राप्त	चैन	-	सुकून, आराम
सुख	-	आनंद	भव	-	संसार

[3]

A.10

क) यशोदा और नंद के पुत्र का नाम कृष्ण है । वे गोकुल में रहते हैं । यशोदा अपने पुत्र कृष्ण को सुलाने की कोशिश कर रही हैं । वे कभी कृष्ण का पालना झुलाती हैं, कभी कृष्ण को दुलारती हैं और कभी लोरी गाने लगती हैं । उस समय उनको जो भी गीत याद आ रहा था, वही गीत गाकर वे कृष्ण को सुलाने का प्रयास कर रहीं हैं । वे कृष्ण को सुलाने के लिए निंदिया रानी को बुलाती हैं । वे कहती हैं कि हे निंदिया रानी ! तुम शीघ्र आओ, तुम्हें कान्हा बुला रहा है । **[2]**

ख) यशोदा कृष्ण की माँ का नाम है । वह बहुत भाग्यशाली हैं । जो सुख और आनन्द अपने घर में बहुत सहजता से प्राप्त कर रही हैं, वह सुख और आनंद ऋषियों, मुनियों, तपस्वियों को कठिन तपस्या करने के बाद भी प्राप्त नहीं हुआ । प्रतिदिन कृष्ण को पालने में सुलाने का और उनकी बाल लीलाओं को देखने का सौभाग्य उन्हीं को प्राप्त है । वे ही वात्सल्य का अनुपम सुख प्राप्त कर रहीं हैं । **[2]**

ग) सूरदास ने श्रीकृष्ण की बाल - लीलाओं का सुन्दर एवं मनोहर वर्णन किया है । वे कहते हैं कि माँ यशोदा कृष्ण को सुलाने की कोशिश कर रहीं हैं । अपने पुत्र को सुलाने के लिए वे अनेक प्रकार के यत्न करती हैं । कृष्ण कभी आँखें बंद

कर लेते हैं और कभी उनके होंठ हिलने लगते हैं (जब बच्चा नींद में होता है, तब दूध पीने का स्मरण कर, उनके होंठ हिलने लगते हैं । छोटे बच्चे ऐसा तब करते हैं, जब वे गहरी नींद में होते हैं ।) यशोदा ने समझा कि कृष्ण गहरी नींद में सोए हैं, तब वे संकेत करके अन्य लोगों को शांत रहने के लिए कहती हैं लेकिन इसी बीच कृष्ण व्याकुल होकर अर्थात हाथ पैर हिलाते हुए उठ जाते हैं । कृष्ण को दोबारा सुलाने के लिए यशोदा फिर लोरी गाने लगती हैं । **[3]**

घ)

निंदरिया	-	नींद	काहे	-	क्यों
बेगहिं	-	शीघ्र	अधर	-	होंठ
सैन	-	इशारा	अकुलाई	-	व्याकुल
दुरलभ	-	कठिन	भामिनी	-	पत्नी

[3]

एकांकी संचय

A.11

क) उपर्युक्त कथन का वक्ता अतुल है । वह अपने बड़े भाई के विषय में ऐसा कह रहा है । अतुल की पत्नी कहती है कि आपको जब जानकारी थी कि वे बीमार हैं, तो आपको वहाँ जाना चाहिए था । आपको देखकर उनको अच्छा लगता । अतुल अपनी पत्नी को समझाता है कि भाभी से बढ़कर भइया का दूसरा कोई नहीं है । यह कड़वा सत्य हमें मानना ही पड़ेगा । **[2]**

ख) अतुल कह रहा है कि उसके बड़े भाई अविनाश के लिए सब कुछ उसकी पत्नी है । उनसे बढ़कर अविनाश का कोई नहीं है । अपनी पत्नी के कारण ही वे परिवार से अलग रह रहे हैं तथा सभी के विरोधों के बावजूद उन्हें बेहद प्रेम करते हैं इसलिए भाभी के रहते हमारे परिवार के किसी अन्य सदस्य को उनके घर जाने तथा उनके लिए कुछ करने का अधिकार नहीं है । अतुल इसी कड़वे सच को स्वीकार करने के लिए कह रहा है । **[2]**

ग) यह कथन अतुल ने कहा है । अतुल, उमा और माँ तीनों बात कर रहे हैं । वे लोग अविनाश के विषय में बात कर रहे हैं । उमा और माँ अतुल से कहते हैं कि तुमको अविनाश को देखने जाना चाहिए था । तब अतुल उनकी बात का उत्तर देते हुए कहता हैं कि उनके पास जाकर भी कोई फायदा नहीं है । भइया में एक बहुत बड़ी कमी है, वे जो कह देते हैं, वह करके दिखाते हैं । वे स्वाभिमानी व्यक्ति हैं । वे किसी के सामने झुकेंगे नहीं और न ही किसी के सामने हाथ फैलाएँगे । वे बहुत ही कठोर मन के हैं । वे टूट सकते हैं लेकिन झुक नहीं सकते । **[3]**

घ) अविनाश अपने घर का बड़ा बेटा हैं । उसने एक विजातीय लड़की से प्रेम किया और उसी से शादी कर ली इसलिए माँ ने उसे घर से निकाल दिया । वह अपने परिवार के साथ बाहर रहता है । वह अपनी माँ को समझाता है कि संतान का पालन माँ-बाप का नैतिक कर्तव्य है । वे किसी पर एहसान नहीं करते । वे केवल राष्ट्र का ऋण - मुक्त हो, यही उनका परितोष है । इससे अधिक मोह है इसलिए पाप है । **[3]**

A.12

क) वक्ता युधिष्ठिर हैं तथा श्रोता भीम हैं । युधिष्ठिर कुरुवंश के राजा पाण्डु के ज्येष्ठ पुत्र हैं । उन्हें धर्मराज भी कहा जाता है । वे सदैव धर्म के मार्ग का अनुसरण करते हैं । सत्य और धर्म उनके जीवन के दो महत्तवपूर्ण सिद्धांत है । **[2]**

ख) युधिष्ठिर और भीम सरोवर के किनारे खड़े हैं । भीम दुर्योधन को सम्बोधित करके कहता है कि ''अपने सारे सहयोगियों की हत्या का कलंक अपने माथे पर लगाकर तू कायरों की भाँति अपने प्राण बचाता फिरता है, तुझे लज्जा नहीं आती ?'' भीम के कथन का उत्तर देते हुए युधिष्ठिर से उपर्युक्त कथन कहा है । **[2]**

ग) दुर्योधन ने उपर्युक्त कथन का विरोध करते हुए कहा कि हँस लो दुष्टों, जितना जी चाहे हँस लो लेकिन यह न भूलना कि मैं अभी जीवित हूँ । मेरी भुजाओं का बल अभी नष्ट नहीं हुआ है । मेरी सेना नष्ट हो चुकी है, परंतु सुयोधन कायर नहीं है । वह प्राण रहते तुम्हारी सत्ता स्वीकार नहीं कर सकता । **[3]**

घ) दुर्योधन ने युधिष्ठिर पर आरोप लगाते हुए कहा कि तुमने अपने स्वार्थ के लिए अपने गुरुजनों, बंधु-बांधवों का निर्ममता से वध किया । क्या पांडवों की रक्त की प्यास अभी तक नहीं बुझी है ? मैं इस बात को भली- भाँति समझ गया हूँ । तुम्हें घमंड है कि तुम अधर्म नहीं करते फिर भी तुम्हारे आँखों के सामने इतना अधर्म हो रहा है । **[3]**

A.13

क) उपर्युक्त पंक्तियों की वक्ता रावल सरूप सिंह की पुत्री सोना है । इन पंक्तियों में वह पन्ना धाय को राजमहल की चारदीवारी से निकलने और दीपदान के उत्सव में भाग लेने की सलाह देती है । सोना पन्ना से कहती है कि सारे नगरवासी दीपदान मना रहे हैं । तुम राजमहल पर बोझ बनकर क्यों बैठी हो । पहाड़ बनने से क्या होगा ? नदी बनो तो तुम्हारा बहता हुआ बोझ पत्थर भी अपने सिर पर धारण करेंगे । इससे तुम्हारे जीवन में आनंद और मंगल होगा । **[2]**

ख) सोना सोलह वर्ष की सुंदर युवती है । वह रावल सरूप सिंह की पुत्री और उदय सिंह की बाल सखी है । वह शिष्टाचारी तथा वाक्पटु है । बनवीर की उस पर विशेष कृपा है । वह अच्छी नृत्यांगना है । 'दीपदान' के आयोजन में वह नृत्य करती है और बनवीर बहुत देर तक उसका नृत्य देखता हैं । वह समझ नहीं पाती है कि उसके नृत्य के पीछे कितना बड़ा षडयंत्र किया जा रहा है । वह इस बात से भी अनभिज्ञ है कि बनवीर उसके माध्यम से कुँवर उदयसिंह को दीपदान में बुलाकर उनकी हत्या करवाना चाहता हैं । **[2]**

ग) पन्ना ने कहा कि इस त्योहार से चित्तौड़ परिचित नहीं है । यहाँ का त्योहार आत्मबलिदान है । चित्तौड़ राग-रंग की भूमि नहीं है, जौहर की भूमि है । यहाँ आग की लपटें नाचती हैं, सोना जैसी रावल की लड़कियाँ नहीं । आँधी में आग की लपटे तेज हो जाती हैं, सोना ! तुम भी इस आँधी में लड़खड़ाकर गिरोगी । तुम्हारे सारे नुपुर टूटकर बिखर जाएँगे । न जाने तुम्हारे गीत की इन लहरों को कौन सी हवा निगल जाएगी, तुम्हारा यह सुख और सुहाग पानी के दो बुलबुलों की तरह बिना सूचना दिए मिट जायेंगे । यह उत्सव बनवीर ने आयोजित किया है । **[3]**

घ) पन्ना ने उदय सिंह को सोना के साथ उत्सव में भेजने से इसलिए मना किया क्योंकि उसे उदय सिंह के प्राण के खतरे में होने का आभास हो रहा था । वह कहती है कि ''कैसे भेज देती ? इतने आदमियों के बीच महाराणा साँगा के वंश के एक वही तो उजाले हैं ।'' पन्ना हर समय आशंकित रहती थी कि कहीं कुँवर उदय सिंह के साथ कोई अनहोनी न घट जाए । उसे बनवीर के षड्यंत्रों का भी भय था । वह जानती थी कि बनवीर उदयसिंह के खून का प्यासा है । वह उदयसिंह की हत्या का मार्ग ढूँढ रहा है । **[3]**

नया रास्ता

A.14

क) मीनू जब देर रात नीलिमा के घर से जा रही थी तो सड़क पर घना अंधकार छाया हुआ था । शायद सड़क पर लगे ट्यूबलाइट्स खराब हो गये थे । अंधकार में मीनू अशोक के पीछे -पीछे चल रही था । अंधकार में उसे कुछ दिखाई नहीं दे रहा था और सड़क पर पड़े पत्थरों पर उसके पैर पड़ने से उसका संतुलन बिगड़ रहा था । वह सँभल-सँभल कर चल रही थी । इस प्रकार अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए वह घर पहुँचती है । मीनू के पिताजी बैठे उसका इंतजार कर रहे थे । **[2]**

ख) मीनू जब देर रात नीलिमा के विवाह समारोह से लौटी । माँ उसका इंतजार कर रही थी । मीनू अपनी माँ बहुत देर तक बातें करती रही । बातें करते-करते न जाने कब मीनू की आँख लग गई । सुबह जब नींद खुली तो माँ ने मीनू को चाय पीने के लिए दी । माँ के इस व्यवहार से मीनू को एक सुखद अनुभूति हुई क्योंकि होस्टल में तो सुबह-सुबह अपने आप ही चाय बनाकर पीनी पड़ती है और फिर माँ के प्यार की तो बात ही कुछ अलग होती है । माँ का प्रेम नि:स्वार्थ, निश्छल होता है । **[2]**

ग) मीनू के मन में नीलिमा के विवाह को लेकर विशेष उत्साह था । आज नीलिमा की बारात आ रही थी । तभी मीनू के हृदय में अचानक एक पीड़ा की अनुभूति हुई । वह अतीत के विषय में सोचने लगी । काश ! मैं भी नीलिमा की तरह सुन्दर होती, तो मेरा भी विवाह हो गया होता । उसे कोई इस तरह नापसंद करके नहीं जाता । **[3]**

घ) नीलिमा के घर जाने के लिए मीनू ने अपना हरे रंग का सलवार-सूट पहना । शीशे के सामने खड़ी होकर मीनू ने अपने केश सुन्दर ढंग से सँवारे, इससे उसका रूप और सलोना लग रहा था । गेहुँआ रंग होने पर भी चार चाँद लगा रहे थे । वह बहुत ही खूबसूरत लग रही थी । मीनू ने जब दर्पण के सामने खड़े होकर अपने को निहारा तब उसे आभास हुआ कि वह बदसूरत नहीं है । **[3]**

A.15

क) धनीमल जी यहाँ मायाराम जी के घर इसलिए आए हैं क्योंकि उन्होंने अपनी लड़की सरिता की शादी में पाँच लाख रुपये खर्च करने का विचार किया हैं । उन रुपयों को वह कैसे खर्च करें ? वे इस बात पर मायाराम से विचार विमर्श करना चाहते हैं । वे अपनी बेटी सरिता की शादी में तीन लाख रुपये का फ्लैट देना चाहते हैं । उन्होंने मायाराम से कहा कि दो लाख रूपए आप इस प्रकार खर्च करना चाहते है, सोचकर बताइए । **[2]**

ख) धनीमल ने फ्लैट देने के लिए यह विचार प्रस्तुत किया कि आजकल के बच्चे अपनी अलग गृहस्थी बसाना चाहते हैं इसलिए वे शादी में एक फ्लैट भी देंगे, जिससे वे अपनी अलग गृहस्थी बसा सकें । **[2]**

ग) दहेज एक कुप्रथा है । इस कुप्रथा के कारण लड़की वाले हमेशा परेशान रहते हैं । दहेज कम देने के कारण बहुत सारी लड़कियाँ जलाई जाती है, उनको सताया जाता है । अनेक प्रकार से परेशान किया जाता है । जिनके माता-पिता अधिक धन दहेज के रूप में देते हैं फिर भी उनकी बेटी सुख से अपना जीवन नहीं बिता पाती है । लड़की वाले जितना अधिक दहेज देते है, लड़के वालों का लोभ उतना ही बढ़ता जाता है । युवा पीढ़ी की समझदारी एवं दृढ़ संकल्प से ही इस प्रथा से छुटकारा पाया जा सकता है । **[3]**

घ) धनीमल ने कहा कि वह शादी में अपनी बेटी को एक फ्लैट देंगे क्योंकि आजकल के बच्चे अलग ही रहकर अपनी गृहस्थी बसाना चाहते हैं । धनीमल की इसी बात पर मायाराम क्रोधित हुए और कहा कि आपका विचार है कि अमित शादी के बाद अपनी अलग गृहस्थी बसाएगा । क्या इसी दिन के लिए हमने उसे पाल-पोसकर बड़ा किया था ? **[3]**

A.16

क) मीनू की छोटी बहन आशा की शादी हो रही थी । मीनू की शादी नही हुई थी जैसे ही मीनू ने आरती की रस्म शुरू की । आस - पड़ोस की सभी महिलाओं ने उसको कटाक्षपूर्ण नजरों से देखा । मीनू को उनकी कटाक्षभरी नजरों ने बेचैन कर दिया । उस समय उसका मन किया की थाल रखकर बिस्तर पर जाकर खूब रोये । **[2]**

ख) मीनू ने आशा की शादी में पूरा सहयोग दिया । शादी के तीन दिन पहले घर आ गई थी । माँ के साथ सभी कार्य किए । पूरे घर में सामान बिखरा था; उसने सब सामान व्यवस्थित करने में माँ की सहायता की । **[2]**

ग) आशा की शादी में आई अन्य औरतें मीनू के बारे में यह बात कर रही थी कि लड़की तो बड़ी सुन्दर है । दयाराम ने इसकी शादी क्यों नहीं की ? दूसरी ने कहा आजकल की लड़कियों के नखरें बहुत होते हैं । किसी ने कहा कि पढ़ाई के लिए कोई बेटियों को इतने उम्र तक घर में बिठा कर नहीं रखता । आधी अवस्था तो पढ़ाई के चक्कर में ही निकल जाती है । मीनू सहेलियों के साथ थी लेकिन ध्यान उन लोगों की बातों में लगा था । **[3]**

घ) विवाह के पुराने रीति-रीवाजों को आज के संदर्भ में मानना एक सीमा तक उचित होता है । व्यर्थ के रिवाजों का पालन करके इंसान खुद के लिए समस्या उत्पन्न करता है जैसे-शादीशुदा बहन ही आरती उतारेगी । ऐसे रिवाजों का पालन नहीं करना चाहिए । छोटी बहन की शादी बड़ी बहन से पहले नहीं हो सकती । यह रिवाज भी उचित नहीं है । प्रत्येक व्यक्ति को अपनी इच्छानुसार इस संसार में, समाज में जीने का पूरा अधिकार है । **[3]**

❖❖❖❖